अध्याय
09

सबसे खतरनाक

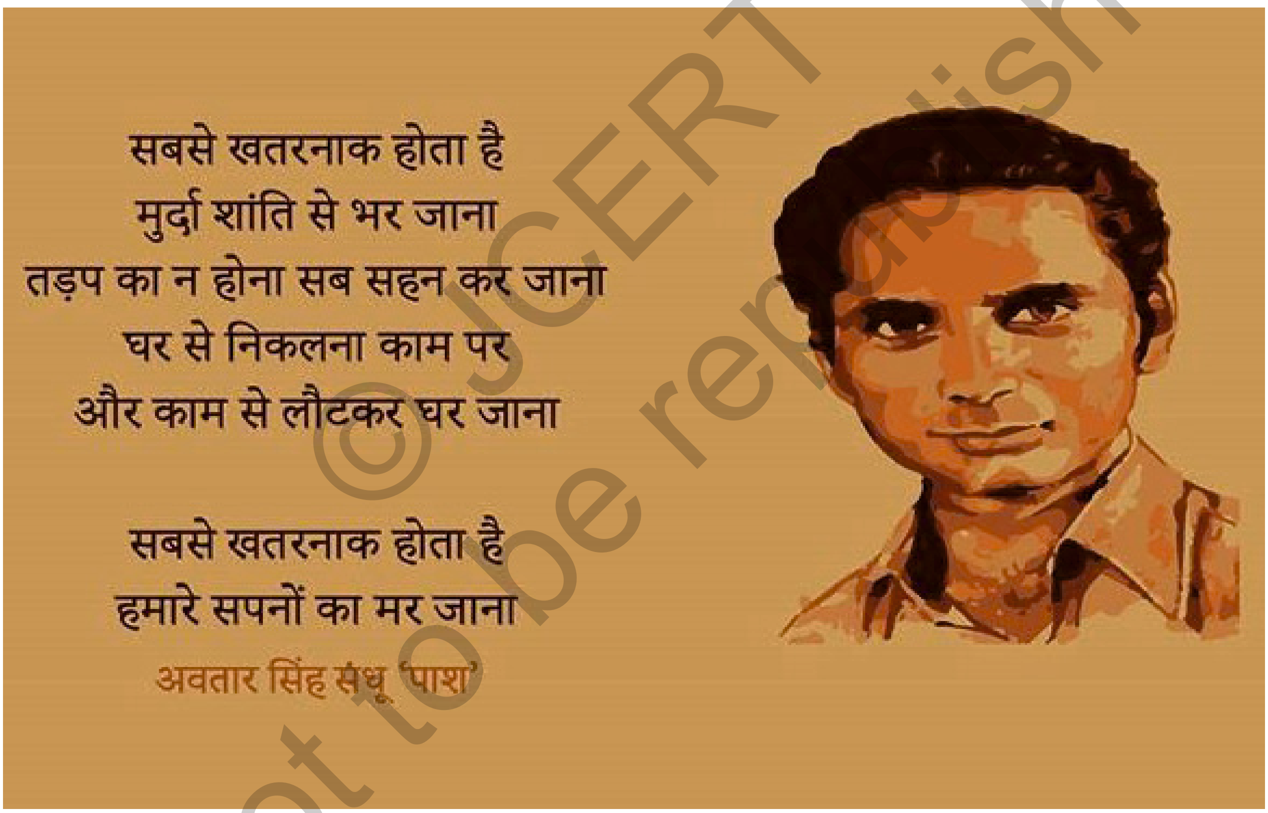

पाश

© JCERT not to be republished

जीवन परिचय

जन्म – 1950

स्थान – जिला- जालंधर, ग्राम- तलवंडी सलेम (पंजाब)

निधन – 23 मार्च, 1988

मूल नाम – अवतार सिंह संधू

शिक्षा – स्नातक

रचनाएं – लौह -कथा, उड़दे बाजां मगर, साडे सामिया बिच, लड़ेंगे साथी पंजाब में, बीच का रास्ता नहीं होता

चर्चित कविता – युद्ध और शांति।

अनुवाद – लहु है कि तब भी गाता है।

इस कविता को हिंदी में रूपांतरण करने का श्रेय श्री चमन लाल को जाता है।

1967 में बंगाल के नक्सलवादी आंदोलन के संपर्क में आए। परिवर्तनकामी आंदोलनों में भाग लेने के कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा। खालिस्तानी नक्सलवादियों के हाथों मारे गए।

साहित्यक विशेषताएं

'पाश' पंजाबी भाषा के कवि हैं। उनकी कविताएं गहरे अर्थों में राजनीतिक कविताएं हैं। जिनमें विचारों एवं भावों का सुंदर मेल है।

अवतार सिंह संधू उर्फ 'पाश की कविताओं में जहां गांव की मिट्टी की महक महसूस होती है, वहीं इंसानी भावनाओं, दुखों की अभिव्यक्ति भी इनमें मिलती है

पाश को सिर्फ अपने लिए नहीं बल्कि सबके लिए समतावादी दुनिया की चाहत थी।

© JCERT not to be republished

उनकी रचनाओं में पंजाबी लोक-संस्कृति और परंपरा की गहन जानकारी मिलती हैं उन्होंने अपनी कविताओं में जन सामान्य की घटनाओं पर व्यथा,निराशा और आक्रोश व्यक्त किया है।

पाश धार्मिक संकीर्णता के कट्टर विरोधी थे।

दलित-पीड़ित शोषित कंठों से निकली आवाज को कविता में पिरोते हुए अंतत: वह अपने प्रिय शहीद भगत सिंह की राह चलते हुए 23 मार्च को शहीद हो गये. भले ही इनकी शहादत के बीच 57 वर्षों का अंतर है परन्तु दोनों राजनीति और संस्कृति की दुनिया को बहुत गहरे प्रभावित करते हैं.

उनकी कविताओं में विद्रोह और बदलाव का स्वर इतना प्रखर था कि उनके हर एक शब्द सत्ता और व्यवस्था को चुनौती दे रहे थे. इस बात को लेकर उनका खूब विरोध भी हुआ। लेकिन बचपन से जिस परिवेश को देखते हुए पाश बड़े हुए थे, उसे शब्दों के द्वारा रचने का साहस उन्होंने बखूबी किया.

साहित्यक विशेषताएं

यह कविता पंजाबी भाषा से अनूदित है। यह दिनोदिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही दुनिया की विद्रूपताओं के चित्रण के साथ उस खौफनाक स्थिति की ओर इशारा करती है, जहाँ प्रतिकूलताओं से जूझने के संकल्प क्षीण पड़ते जा रहे हैं। पथरायी आँखों-सी तटस्थता से कवि की असहमति है। कवि इस प्रतिकूलता की तरफ विशेष संकेत करता है जहाँ आत्म के सवाल बेमानी हो जाते हैं। जड़ स्थितियों को बदलने की प्यास के मर जाने और बेहतर भविष्य के सपनों के गुम हो जाने को कवि सबसे खतरनाक स्थिति मानता है।

कवि का मानना है कि मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी-लोभ की मुट्ठी खतरनाक स्थितियाँ तो हैं, परंतु अन्य बातों से कम खतरनाक हैं। बिना कारण पकड़े जाना, कपट के वातावरण में सच्ची बात गुम होना या विवशतावश समय गुजार लेना या गरीबी में दिन काटना आदि बुरी दशाएँ हैं, परंतु खतरनाक नहीं।

© JCERT not to be republished

कवि आगे कहते हैं कि सबसे खतरनाक वह है जब व्यक्ति में मुर्दों जैसी शांति भर जाती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति की विरोध-शक्ति समाप्त हो जाती है। व्यक्ति बँधे-बँधाए ढर्रे पर चलता है तो उसके सपने समाप्त हो जाते हैं। समय की गति रुकना भी खतरनाक दशा है, क्योंकि व्यक्ति समय के अनुसार बदल नहीं पाता।

सबसे खतरनाक स्थिति वह है जब व्यक्ति जीवन के उल्लास व उमंग से मुँह मोड़कर निराशा व अवसाद से घिरकर सन्नाटे में जीने का अभ्यस्त हो जाता है। उसके अंदर कभी न समाप्त होने वाली शांति छा जाती है। वह मूक दर्शक बनकर सब कुछ चुपचाप सहन करता जाता है, ढर्रे पर आधारित जीवन जीने लगता है। वह घर से काम पर चला जाता है और काम समाप्त करके घर लौट आता है। उसके जीवन का मशीनीकरण हो जाता है। उसके सभी सपने मर जाते हैं और जीवन में कोई नयापन नहीं रह जाता है। उसकी सारी इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं। ये परिस्थितियाँ अत्यंत खतरनाक होती हैं।

कवि कहता है कि सबसे खतरनाक दृष्टि वह है जो अपनी कलाई पर बँधी घड़ी को सामने चलता देख कर सोचे कि जीवन स्थिर है; दूसरे शब्दों में, मनुष्य नित्य हो रहे परिवर्तनों के अनुसार स्वयं को नहीं बदलता और न ही स्वयं को बदलना चाहता है।

मनुष्य की संवेदनशून्यता भी खतरनाक है। अन्याय के प्रति विद्रोह की भावना समाप्त होना भी गलत है। गीत भी जब मरसिए पढ़कर सुनाने लगे और आतंकित व्यक्तियों के दरवाजों पर अकड़ दिखाए तो वह भी खतरनाक होता है।

उल्लू व गीदड़ों की आवाज युक्त रात भी खतरनाक है। कवि कहता है कि जब मनुष्य आत्मा की आवाज को अनसुना कर देता है तो वह संवेदनशून्य हो जाता है। मेहनत का लुटना, पुलिस की मार, गद्दारी व लोभ की दशा अधिक खतरनाक नहीं है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश -1

मेहनत की लूट सबसे ख़तरनाक नहीं होती

पुलिस की मार सबसे ख़तरनाक नहीं होती

ग़द्दारी और लोभ की मुट्ठी सबसे ख़तरनाक नहीं होती

बैठे-बिठाए पकड़े जाना बुरा तो है

सहमी-सी चुप में जकड़े जाना बुरा तो है

सबसे ख़तरनाक नहीं होता

कपट के शोर में सही होते हुए भी दब जाना बुरा तो है

जुगनुओं की लौ में पढ़ना

मुट्ठियां भींचकर बस वक्त निकाल लेना बुरा तो है

सबसे ख़तरनाक नहीं होता

मेहनत की लूट सबसे ख़तरनाक नहीं होता

शब्दार्थ

गद्दारी - देश के शासन के विरुद्ध होकर उसे हानि पहुँचाने का भाव।

लोभ— लालच।

सहमी— डरी।

जकड़े जाना— पकड़े जाना।

कपट— छल।

लौ— रोशनी।

मुट्ठियाँ भींचकर— गुस्से को दबाकर।

वक्त— समय।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इसके रचयिता पंजाबी कवि पाश हैं। पंजाबी भाषा से अनूदित इस कविता में, कवि ने दिनोंदिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही स्थितियों को उसकी विद्रूपताओं के साथ चित्रित किया है।

भावार्थ- यह कविता पंजाबी भाषा से अनूदित है। कवि यहाँ उन स्थितियों का वर्णन करता है जो मानव को दुख तो देती हैं, परंतु सबसे खतरनाक नहीं होतीं। वह बताता है कि किसी की मेहनत की कमाई को लूटने की स्थिति सबसे खतरनाक नहीं है, क्योंकि उसे फिर पाया जा सकता है। पुलिस की मार पड़ना भी इतनी खतरनाक नहीं है। किसी के साथ गद्दारी करना अथवा लोभवश रिश्वत देना भी खतरनाक है, परंतु अन्य बातों जितना नहीं। वह कहता है कि किसी दोष के बिना पुलिस द्वारा पकड़े जाने से बुरा लगता है तथा अन्याय को डरकर चुपचाप सहन करना भी बुरी बात है, परंतु यह सबसे खतरनाक स्थिति नहीं है। छल-कपट के माहौल में सच्ची बातें छिप जाती हैं, कोई जुगनू की लौ में पढ़ता है अर्थात् साधनहीनता में गुजारा करता है, विवशतावश अन्याय को सहन कर समय गुजार देना आदि बुरा तो है, परंतु सबसे खतरनाक नहीं है। कई बातें ऐसी हैं जो बहुत खतरनाक हैं और उनके परिणाम दूरगामी होते हैं। किंतु सबसे खतरनाक नहीं है।

© JCERT not to be republished

विशेष—

'सबसे खतरनाक नहीं होती' तथा 'बुरा तो है' की आवृत्ति से परिस्थितियों की भयावहता का पता चलता है।

'सहमी-सी चुप' में उपमा अलंकार है।

'बैठे-बिठाए' में अनुप्रास अलंकार है।

साधनहीनता के लिए 'जुगनू की लौ' नया प्रयोग है।

'गद्दारी,लोभ की मुट्ठी' भी नया प्रयोग है।

कथन में जोश, आवेश व मौलिकता है।

'मुट्ठयाँ भींचकर बस वक्त निकाल लेने' का बिंब प्रभावशाली है।

सहज सरल विषय अनुकूल भाषा है मुक्तक छंद का प्रयोग किया है।

काव्यांश -2

सबसे ख़तरनाक होता है मुर्दा शांति से भर जाना

तड़प का न होना

सब कुछ सहन कर जाना

घर से निकलना काम पर

और काम से लौटकर घर आना

सबसे ख़तरनाक होता है

हमारे सपनों का मर जाना

सबसे ख़तरनाक वो घड़ी होती है

आपकी कलाई पर चलती हुई भी जो

आपकी नज़र में रुकी होती है

शब्दार्थ—

मुर्दा शांति- निष्क्रियता, प्रतिरोध विहीनता की स्थिति।

तड़प— बेचैनी।

सपनों का मरना— इच्छाओं का नष्ट होना।

घड़ी— समय बताने का यंत्र, वक्त।

निगाह— दृष्टि।

प्रसंग— प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इसके रचयिता पंजाबी कवि पाश हैं। पंजाबी भाषा से अनूदित इस कविता अंश में कवि ने जड़ता को सबसे खतरनाक बताया है।

व्याख्या— प्रस्तुत कविता में कवि ने जड़ता से भरी शांति को सबसे खतरनाक बताया है- जिसमें किसी भी प्रकार की कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। अर्थात् कवि समाज में बढ़ती जा रही उस खौफनाक स्थिति की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करना चाहता है, जिसमें हम पथराई आंखों से सभी प्रकार का अन्याय देखते और झेलते हैं, पर किसी भी प्रकार का प्रतिरोध दर्ज नहीं कराते।

कवि ने इस स्थिति को हमारे लिए सबसे अधिक खतरनाक बताया है जहां हमारे सपने मर जाते हैं। अर्थात् जब हम अपनी इच्छाओं और कल्पनाओं को साकार रूप प्रदान करने

© JCERT not to be republished

में असमर्थ होते हैं। ऐसे में आत्मा के सवाल बेमानी हो जाते हैं। कवि उस स्थिति को भी सबसे अधिक खतरनाक मानता है, जिसमें बेहतर भविष्य के सपने गुम हो जाते हैंऔर निरंतर चलता वक्त (घड़ी) भी हमें रुका हुआ दिखाई देता है।

कवि चाहते हैं कि हम अन्याय का डटकर प्रतिरोध करें और तटस्थ भाव को त्यागें।

विशेष-

कविता मुक्त छंद में लिखी है भाषा सरल,सहज एवं भाव अनुकूल है।

कवि जीवन में आशा व समयानुसार परिवर्तन की माँग करता है।

'सपनों का मर जाना' में लाक्षणिकता है।

'मुर्दा शांति' से भाव स्पष्ट हो गया है।

भाषा व्यंजना प्रधान है। खड़ी बोली है।

अनुप्रास अलंकार है।

काव्यांश – 3

सबसे खतरनाक वह आँख होती है

जो सब कुछ देखती हुई भी ज़मी बर्फ होती है

जिसकी नजर दुनिया को मुहब्बत से चूमना भूल जाती है

जो चीजों से उठती अंधेपन की भाप पर ढुलक जाती है

जो रोज़मर्रा के क्रम को पीती हुई

एक लक्ष्यहीन दुहराव के उलटफेर में खो जाती है

शब्दार्थ—

जमी बर्फ– संवेदनशून्यता।

दुनिया– संसार।

मुहब्बत– प्रेम।

रोजमर्रा– दैनिक कार्य।

उलटफेर– चक्कर।

दुहराव– दोहराना।

प्रसंग— प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग–1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इसके रचयिता पंजाबी कवि पाश हैं। पंजाबी भाषा से अनूदित इस कविता अंश में कवि ने जड़ता यानी तटस्थता को सबसे अधिक खतरनाक बताया है।

भावार्थ— कवि पाश इन पंक्तियों के माध्यम से कहते हैं कि सबसे खतरनाक वह आँख है, जो संसार में घटित होने वाली प्रत्येक घटना को बिना किसी प्रतिक्रिया के शांत भाव से देखती रहती है और चुपचाप अन्याय को सहती है। मगर कुछ भी ना देखने का अभिनय करती है। जो दृष्टि संपूर्ण संसार में प्रेम का प्रसार करना चाहती है प्रत्येक वस्तु में चेतनता लाना चाहती है किंतु प्रतिकूल परिस्थितियों के समक्ष हार जाती है और प्रतिदिन के क्रियाकलापों में उद्देश्य को भूल जाती है।

कवि के अनुसार वे आँखें जमी हुई बर्फ के

© JCERT not to be republished

समान होती हैं और यह स्थिति खतरनाक है। जिसका कोई लक्ष्य नहीं है, जो लक्ष्यहीन होकर अपनी दिनचर्या को पूरा करती है, खतरनाक होती है।

विशेष—

कवि संवेदन शून्यता पर गहरा व्यंग्य करता है।

'जमी बर्फ', 'मुहब्बत से चूमना', 'अंधेपन की भाप', 'रोजमर्रा के क्रम को पीती' आदि नए भाषिक प्रयोग हैं।

'जमी बर्फ' संवेदनशून्यता का परिचायक है।

भाषा व्यंजना प्रधान है।

'अंधेपन की भाप' में रूपक अलंकार है।

खड़ी बोली है।

काव्यांश 4

सबसे खतरनाक वह चाँद होता है

जो हर हत्या काण्ड के बाद

विरान हुए आँगनों में चढ़ता है

पर आपकी आँखों को मिर्चों की तरह नहीं गड़ता है

शब्दार्थ –

वीरान – सूना

प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इसके रचयिता पंजाबी कवि पाश हैं। यहाँ बदली परिस्थितियों को विवश होकर देखने वाली आंखों का चित्रण किया है।

व्याख्या– कवि अपराधीकरण के बारे में बताता है कि वह चाँद सबसे खतरनाक है जो हत्याकांड के बाद उन आँगनों में चढ़ता है जो वीरान हो गए हैं। चाँद सौंदर्य और शांति का परिचायक है, परंतु हत्याकांडों का चश्मदीद गवाह भी है। ऐसे चाँद की चाँदनी लोगों की आँखों में मिर्च की तरह नहीं गड़ती। इसके विपरीत लोग शांति महसूस करते हैं।

सब कुछ हमारी आंखों के सामने घटित होता है और हम कुछ भी नहीं कर पाते हैं।

विशेष—

रचना मुक्त छंद की है भाषा सरल, सहज एवं बोध है यहां चांद को सांत्वना देने वाले के रूप में मानवीकरण किया गया है।

चाँद' आस्था व शांति का प्रतीक है।

'मिर्च की तरह गड़ना' सशक्त प्रयोग है।

अनुप्रास अलंकार है।

काव्यांश – 5

सबसे खतरनाक वह गीत होता है

आपके कानों तक पहुंचने के लिए

जो मरसिए पढ़ता है

आतंकित लोगों के दरवाजों पर

जो गुंडों की तरह अकड़ता है

© JCERT not to be republished

शब्दार्थ-

मरसिए- मृत्यु पर गाए जाने वाले करुण गीत।

आतंकित- डरे हुए।

जिंदा रूह— जीवित आत्मा।

चौगाठों— चौखटें।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इसके रचयिता पंजाबी कवि पाश हैं। कवि कहते हैं जो गीत मृत्यु के उपरांत सुनाया जाता है, वह गीत जीवित इंसान को सुना कर उन्हें डराना खतरनाक है।

इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि वे गीत सबसे खतरनाक हैं जो मनुष्य के हृदय में शोक की लहर दौड़ाते हैं। वस्तुत: ये गीत मृत्यु पर गाए जाते हैं तथा भयभीत लोगों को और डराते हैं, उन्हें गुंडों की तरह धमकाते हैं। कवि ऐसे गीतों को निरर्थक मानता है, क्योंकि ये प्रतिरोध के भाव को नहीं जगाते।

जो गीत मृत्यु के उपरांत सुनाया जाता है, वह गीत जीवित इंसान को सुना कर उन्हें डराना खतरनाक की निशानी है। कवि के अनुसार ऐसे गीतों का कोई मतलब नहीं है।

विशेष—

कवि ने संवेदनहीनता व निराशा को खतरनाक बताया है। प्रतीकात्मकता है।

'गुंडे की तरह अकड़ता है', बिंब सार्थक व सजीव है।

गीत का मानवीकरण किया गया है।

'गुंडों की तरह' में उपमा अलंकार है।

खड़ी बोली है।

काव्यांश -6

सबसे खतरनाक वह रात होती है
जो जिंदा रूह के आसमानों पर ढलती है
जिसमें सिर्फ उल्लू बोलते और हुआँ हुआँ करते गीदड़
हमेशा के अंधेरे बंद दरवाजों-चौगाठो पर चिपक जाते हैं
सबसे खतरनाक वह दिशा होती है
जिसमें आत्मा का सूरज डूब जाए
और उसकी मुर्दा धूप का कोइ टुकड़ा
आपके जिस्म के पूरब में चुभ जाए

शब्दार्थ-

गद्दारी- धोखा,

रूह- आत्मा,

बैठे-बिठाए- अकारण

तड़प- बेचैनी,

वीरान- उजड़ा हुआ,

चौगाठ- चौखटो

जिस्म- शरीर

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इसके रचयिता पंजाबी कवि पाश हैं।

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23
© JCERT not to be republished

भावार्थ— कवि के अनुसार वह रात बहुत खतरनाक होती है, जो जीवित इंसान के ऊपर आसमान में आशा कि नहीं निराशा की बादल लाती है। यह निराशा के बादल उस जीवित व्यक्ति के घर आंगन में विद्रोह की तरह शोक बन कर रह जाते हैं। जिनसे व्यक्ति कभी भी बाहर नहीं निकल पाता है।

कवि कहते हैं कि सबसे खतरनाक दिशा वह है जिसमें आत्मा का सूरज डूब जाता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपने अंदर की आवाज को नहीं सुनता। उसकी मुर्दा जैसी स्थिति हमें कहीं कोई प्रभाव छोड़ जाए तो यह स्थिति भी खतरनाक होती है। ऐसे लोगों में धूप की किरणों से आशा उत्पन्न भी हो तो मृतप्राय ही होती है। जो अपने ही शरीर रूपी पूर्व दिशा में चुभकर उसे लहूलुहान करती है। कवि कहना चाहता है कि अन्याय को सहना ही लोगों ने अपनी नियति मान लिया है।

कवि आगे कहते हैं कि किसी की मेहनत की कमाई लुट जाए तो वह खतरनाक नहीं होती। पुलिस की मार या गद्दारी आदि भी इतनी खतरनाक नहीं होती। खतरनाक स्थिति वह है जब व्यक्ति में संघर्ष करने की क्षमता ही खत्म हो जाए। जड़ स्थितियों को बदलने की प्यास के मर जाने और बेहतर भविष्य के सपनों के गुम हो जाने को कवि सबसे खतरनाक स्थिति मानते हैं।

विशेष—

'उल्लू बोलते' और 'हुआँ-हुआँ' बिम्ब सार्थक और सजीव है। मुक्त छंद की रचना है। भाषा सरल, सहज और विषयानुकूल है। 'आत्मा का सूरज' और 'जिस्म के पूरब' में रूपक अलंकार है। खड़ी बोली है। सांकेतिक भाषा है। प्रतिकूल परिस्थितियों में आत्मा दमित होती जा रही है प्रतीकात्मक का प्रयोग किया। काव्य रचना मुक्त छंद है।

© JCERT not to be republished

पादयपुस्तक से हल

प्रश्न 1 : कवि ने किस आशय से मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी-लोभ को सबसे खतरनाक नहीं माना।

उत्तर— कवि ने मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी लोभ को सबसे खतरनाक नहीं माना क्योंकि इन तीनों में आशा व उम्मीद की किरण बची रहती है। इनका प्रभाव सीमित होता है। इन क्रियाओं में प्रतिरोधक क्षमता बनी रहती है। इन स्थितियों को बदला जा सकता है।

प्रश्न 2: 'सबसे खतरनाक' शब्द के बार-बार दोहराए जाने से कविता में क्या असर पैदा हुआ?

उत्तर— 'सबसे खतरनाक' शब्द के बार-बार, दोहराए जाने से पाठकों का ध्यान खतरनाक बातों की तरफ अधिक आकर्षित होता है। वे समाज की स्थितियों पर गंभीरता से विचार करते हैं। यह शब्द उस विभीषिका की ओर संकेत करता है जो समाज को निर्जीव कर

रही है। इसके बार-बार प्रयोग से कथ्य प्रभावशाली ढंग से व्यक्त हुआ है।

प्रश्न 3: कवि ने कविता में कई बातों को 'बुरा है' न कहकर 'बुरा तो है' कहा है। 'तो' के प्रयोग से कथन की भंगिमा में क्या बदलाव आया है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— कवि ने बैठे बिठाए पकड़े जाना, सहमी चुप में जकड़ने, कपट के शोर में सही होते हुए भी दब जाने आदि को बुरा तो है कहा है। 'बुरा' शब्द प्रत्यक्ष आरोप लगाता है, परंतु 'तो' लगाने से सारा जोर 'तो' पर चला जाता है। इसका अर्थ है कि स्थितियाँ खराब अवश्य है, परंतु उनमें सुधार की गुंजाइश है। साथ ही, यह चेतावनी भी देता है कि अगर इन्हें नहीं सुधारा गया तो भविष्य में हालात और बिगड़ेंगे।

प्रश्न 4: 'मुर्दा शांति से भर जाना और हमारे सपनों का मर जाना' - इनको सबसे खतरनाक माना गया है। आपकी दृष्टि में इन बातों में परस्पर खतरनाक माना गया है। आपकी दृष्टि में इन बातों में परस्पर क्या संगति है और ये क्यों सबसे खतरनाक है?

उत्तर— 'मुर्दा शांति से भर जाना' का अर्थ है-निष्क्रिय होना, जड़ हो जाना या प्रतिक्रिया शून्य हो जाना। ऐसी स्थिति बहुत खतरनाक है। ऐसा व्यक्ति सामाजिक अन्याय के खिलाफ संघर्ष नहीं कर पाता। उसके मन में किसी तरह की कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। वह जीवित होते हुए भी मृत के समान होता है। 'हमारे सपनों का मर जाना' का अर्थ है-कुछ करने की इच्छा समाप्त होना। मनुष्य कल्पना करके ही नए-नए कार्य करता है तथा विकसित होता है। सपनों के मर जाने से हम यथास्थिति को स्वीकार करके स्थिर एवं विचारशून्य हो जाते हैं।

प्रश्न 5: सबसे खतरनाक वह घड़ी होती है/ अपनी कलाई पर चलती हुई भी जो/आपकी निगाह में रुकी होती है। इन पंक्तियों में 'घड़ी' शब्द की व्यंजना से अवगत कराइए।

उत्तर— 'घड़ी' शब्द के दो अर्थ मिलते हैं। पहला अर्थ जीवन से जुड़ा हुआ है। जीवन घड़ी की तरह चलता रहता है। वह कभी नहीं रुकता। मनुष्य की चाह समाप्त होने पर ही वह जड़ हो जाता है। दूसरा अर्थ है-दिनचर्या। यदि व्यक्ति समय के अनुसार स्वयं को बाँध लेता है तो वह यांत्रिक हो जाता है। वह ढर्रे पर चलता है। उसके जीवन में नया कुछ करने का अवकाश नहीं होता।

प्रश्न 6: वह चाँद सबसे खतरनाक क्यों होता है, जो हर हत्याकांड के बाद/आपकी आँखों में मिर्चों की तरह नहीं गड़ता है?

उत्तर— 'चाँद' सौंदर्य का प्रतीक है, परंतु हत्याकांड के बाद कोई प्राणी सौंदर्य की कल्पना नहीं कर सकता। हत्या होने पर आम व्यक्ति के मन में आक्रोश उत्पन्न होता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य को चाँद आनंद प्रदान करने वाला नहीं लगता। जो लोग ऐसी स्थिति में आनंद लेने की कोशिश करते हैं तो ऐसी संवेदनशून्यता वास्तव में खतरनाक है।

© JCERT not to be republished

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'सबसे खतरनाक' नामक कविता के रचयिता कौन हैं?

(क) रामनरेश त्रिपाठी

(ख) दुष्यंत कुमार

(ग) अवतार सिंह पाश

(घ) त्रिलोचन

उत्तर– (ग) अवतार सिंह पाश

2. किस की लौ में पढ़ना बुरा है?

(क) बल्ब

(ख) मोमबत्ती

(ग) लैंप

(घ) जुगनू

उत्तर– (घ) जुगनू

3. अपने सपनों का मर जाना कैसा होता है?

(क) भयानक

(ख) भयंकर

(ग) सबसे बुरा

(घ) अच्छा

उत्तर– (ग) सबसे बुरा

4. समय के गतिशील होने पर भी इसका रुका होना है–

(क) सबसे भयावह

(ख) सबसे भयानक

(ग) सबसे खतरनाक

(घ) सबसे बुरा

उत्तर– (ग) सबसे खतरनाक

5. जिस की नज़र दुनिया को मुहब्बत से चूमना भूल जाती है; वह कैसी होती है?

(क) सबसे भयावह

(ख) सबसे डरावनी

(ग) सबसे भयंकर

(घ) सबसे खतरनाक

उत्तर– (घ) सबसे खतरनाक

6. किसी के मरने पर गाया जाने वाला गाना कहलाता है–

(क) मृतगान

(ख) मरगान

(ग) मरसिया

(घ) मरसीना

उत्तर– (ग) मरसिया

7. सबसे खतरनाक नहीं होती है–

(क) मेहनत की लूट

(ख) मेहनत की रोटी

(ग) मेहनत की कमाई

© JCERT not to be republished

(घ) मेहनत का भ

उत्तर– (क) मेहनत की लूट

8. किसकी मार सबसे खतरनाक नहीं होती–

(क) समय की

(ख) लोभ की

(ग) चिंता की

(घ) पुलिस की

उत्तर– (घ) पुलिस की

10. 'मुर्दा शांति से भर जाना' क्या होता है–

(क) सबसे आसान

(ख) सबसे कठिन

(ग) सबसे खतरनाक

(घ) सबसे श्रेष्ठ

उत्तर– (ग) सबसे खतरनाक

11. 'रूह' का अर्थ है–

(क) सुगंध

(ख) आत्मा

(ग) देह

(घ) आग

उत्तर– (ख) आत्मा

© JCERT not to be republished